दैनिक
नेशनल एक्सप्रेस
हर खबर समय पर
epaper.nationalexpress.co.in
31 May 2025 - Page 11

सदैव प्रासंगिक रहे, वही है सच्चा साहित्यः राष्ट्रपति

नेशनल एक्सप्रेस संवाददाता। बदलते सामाजिक परिप्रेक्ष्य में साहित्य ने भी अपना रूप बदला है। वर्तमान समय में संस्थाएं, चुनौतियाँ, प्राथमिकताएँ बदली हैं और साहित्य भी बदला है, लेकिन वास्तव में सच्चा साहित्य वही है जो समय बीतने के बाद भी प्रासंगिक बना रहे। किसी भी युग में स्नेह और करुणा जैसे भावनात्मक संदर्भ बदल सकते हैं, लेकिन उनकी मूल संवेदना नहीं बदलती।यह वक्तव्य देश की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बृहस्पतिवार को राष्ट्रपति भवन सांस्कृतिक केंद्र में दो दिवसीय साहित्यिक सम्मेलन "साहित्य कितना बदला है?"का शुभारंभ और उद्घाटन करते हुए दिया। समारोह में उद्बोधन देते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि छात्र जीवन से ही उनमें साहित्य और साहित्यकारों के प्रति सम्मान के साथ-साथ कृतज्ञता की भावना रही है। बीतते समय के साथ यह भावना और भी गहन होती चली गई। उन्होंने कहा कि यह उनकी इच्छा थी कि देश भर से विभिन्न भाषाओं के अनेक साहित्यकार राष्ट्रपति भवन आएँ और आज यह भावना मूर्त रूप में साकार हुई है। राष्ट्रपति ने कहा कि हमारे देश में अनेक भाषाओं और अनगिनत साहित्यिक परंपराओं की समृद्ध विरासत है। इस विविधता में भारतीयता का अद्भुत स्पंदन महसूस होता है। यह भावना देश के सामूहिक अवचेतन में गहराई से समाई हुई है। उन्होंने कहा कि वह देश की सभी भाषाओं और बोलियों को अपनी भाषा मानती हैं, और इसीलिए उन सभी का साहित्य उन्हें अपना साहित्य प्रतीत होता है।समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए भारत सरकार के संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि साहित्य समाज के, समाज की भावनाओं के और समाज की स्थितियों के दर्पण के समान है या स्वरूप है। दर्पण होने के साथ-साथ यह समाज के मार्गदर्शन का महत्वपूर्ण कार्य भी करता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हमारा देश सांस्कृतिक पुनरुद्धार के दौर से गुजर रहा है। ऐसी स्थिति में साहित्य सर्जकों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।उनसे पूर्व संस्कृति मंत्रालय की विशेष सचिव और वित्तीय सलाहकार रंजना चोपड़ा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया तथा साहित्य अकादमी के अध्यक्ष साहित्यकार माधव कौशिक ने समारोह में उपस्थित सभी अतिथियों का अभिनंदन किया।कवि सम्मेलन में सुनाई गईं बहुभाषी कविताएं:कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र के बाद 'सीधा दिल से: कवि सम्मेलन' का आयोजन किया गया। कविता के लिए समर्पित इस सत्र की अध्यक्षता उर्दू शायर शीन काफ़ निज़ाम ने की एवं इस सत्र में विशिष्ट अतिथि के रूप में साहित्य अकादमी के अध्यक्ष माधव कौशिक उपस्थित रहे। इस अवसर पर अपनी कविताओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करने वाले कवियों में रणजीत दास (बांग्ला), ममंग दई (अंग्रेज़ी), दिलीप झवेरी (गुजराती), अरुण कमल (हिंदी), महेश गर्ग (हिंदी), शफ़ी शौक़ (कश्मीरी), दमयंती बेशरा (संताली) और रवि सुब्रह्मण्यम् (तमिल) सम्मिलित थे। अकादमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने काव्य पाठ करने वाले सभी कवियों का पारंपरिक अंगवस्त्रम प्रदान कर अभिनंदन और स्वागत किया|